षष्ठ अध्याय

समापन

षष्ठ अध्याय

समापन

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल हिन्दी के बहुमुखी प्रतीभासंपन्न साहित्यकार है। लेकिन उनकी विशेष ख्याति नाटककार के रूप में ही है। स्वातंत्र्योत्तर अग्रणी हिन्दी नाटककारों में जगदीशचंद्र माथुर, मोहन राकेश के साथ ही साथ डॉ. लाल के नाम का उल्लेख बड़े आदर के साथ किया जाता है। इसमें संदेह नहीं कि, डॉ. लाल के सभी नाटक कथ्य, शिल्प, शैली और रंगमंच की दृष्टि से अपना विशिष्ठ महत्व रखते हैं। अतः उनके नाटकों का अध्ययन अनेक दृष्टीयों से किया गया है, और किया जा भी रहा है। मिथक साहित्यलोचन की एक नयी पद्धति और हिन्दी पद्धति है और हिन्दी नाट्यालोचन में डॉ. लाल के मिथक नाटकों का अध्ययन करना हमें अभिप्रेत है। मिथक किसी भी राष्ट्र की जातीय संस्कृति के द्योतक है। मिथक को पुराणकथा, पुराकथा, पुरावृत्तकथा, दंतकथा, देवकथा, प्रतीककथा, कल्पितकथा आदि शब्दों से अभिहित किया जाता है। आदिम मानव ने सर्वप्रथम मिथकों को चन्द्रमा, सूर्य, तारे, नदी तथा संसार के ऐसी चिजों से जोड़ा जो प्रकृति का अविभाज्य अंग बन गयें। धीरे-धीरे मिथक का संबंध इतिहास, साहित्य, धर्म, दर्शन, समाज, राजनीति, भाषा तथा अन्य कई बातों से स्थापित हो गया। मिथक प्राचीन कथाओं को परंपराओं से जोड़कर अधिक गहरे तथा विश्वासपूर्ण बनाते हैं। वास्तव में किसी भी अनुभूति, चिन्तन तथा समस्या के कालातीत रूप को प्रस्तुत करने का समर्थ एवं सशक्त माध्यम मिथकीय कथा एवं पात्र होते हैं। मिथकीय प्रसंग, मिथकीय घटना या मिथकीय पात्र यह सिद्ध कर देते हैं कि वे सभी कालत्रयी है।

मिथक और साहित्य का घनिष्ठ संबंध है। साहित्यकारों ने अपने साहित्य में मिथकों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है, और पूराने मिथकों के आधुनिक जीवन संदर्भ में नयी व्याख्या करने का प्रयास किया है। नाटक-साहित्य एक समृद्ध और प्रभावी विधा है जिसमें आज के नाटककारों ने मिथकों का प्रयोग करके हिन्दी नाट्य-साहित्य की अभिवृद्धि की है। डॉ. लाल के मिथक नाटक दूरदृष्टि से

अपना विशेष महत्व रखते है।

डॉ. लाल के नाट्य सृष्टि का फलक बड़ा ही विस्तृत है। उन्होंने मुख्यताः सामाजिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक, असंगत, नाटक लिखे हैं जो उनकी प्रयोग धर्मिता के परिचायक है। उनके ऐतिहासिक-पौराणिक नाटकों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे वास्तव में पौराणिक या ऐतिहासिक नाटक न होकर पुराण और इतिहास का उपयोग केवल पृष्ठभूमि के रूप में ही किया है। इसलिये श्री जयशंकर प्रसाद, हरिकृष्ण प्रेमी, रामकुमार वर्मा आदि के ऐतिहासिक-पौराणिक नाटकों की अपेक्षा डॉ. लाल के नाटक सर्वथा नये प्रयोग है। डॉ. लाल के मिथक नाटकों के मूल स्त्रोत महाभारत, पुराण, तंत्रकाल रहे हैं। सूर्यमुख, यक्षप्रश्न, उत्तरयुद्ध, महाभारत काल से पृष्ठभूमि पर लिखे गये मिथक नाटक हैं। नरसिंह कथा, पौराणिक कथा पर आधृत है। कलंकी तंत्रकार की पृष्ठभूमि पर लिखा गया मिथक नाटक है। मिस्टर अभिमन्यु एवं एक सत्य हरिश्चंद्र क्रमशः महाभारत तथा पुराणाभासित मिथक नाटक है। सभी मिथक नाटकों में इतिहास और पुराणों का केवल सहारा ही लिया गया है, अन्यथा नाटककार के मिथक नाटकों का कथ्य पूरी तरह से आज के जीवन का लेखा-जोखा है, चाहे वह जीवन सामाजिक हो, राजनीतिक हो, धार्मिक हो या नैतिक हो या आर्थिक हो। डॉ. लाल के मिथक पात्र स्वतंत्र रूप से उभरकर आये हैं जैसे - प्रद्युम्न, वेनुरती, यक्ष, विदूषक, हिरण्यकशीपु, प्रल्हाद, हेरूप, अवधूत, राजन, लौका तथा जीतन। प्रत्येक पात्र का अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व होकर अलग विशेषता भी है। प्रद्युम्न वेनुरती आपसी प्यार में इतने खो जाते हैं कि उन्हें प्रजा राजमुकुट, राज्यलिप्सा, राज्यगद्दी आदि बातों से कोई सारोकार नहीं रहता। वे केवल एक दूसरे के प्यार में जीना चाहते हैं, मरना चाहते हैं और मर मिटते भी है। वास्तव में नाटककार ने पौराणिक प्रद्युम्न और वेनुरती को आधुनिक प्रेमी और प्रेमीका के रूप में चित्रित किया है। जो अपने प्यार में नैतिक मूल्यों को भी ठुकरा देते हैं। डॉ.

डॉ. लाल के यक्षप्रश्न नाटक का यक्ष समय का प्रतीक है। यक्ष पात्र की योजना नाटककार की अपनी पैनी दृष्टी का परिणाम है। वर्तमान जीवन सन्दर्भ की दृष्टि से यक्षपात्र का महत्व कालातीत है। उसके द्वारा पुछे गये प्रश्न सनातन होकर भी आधुनिक युगबोध के परिचायक है। पांडवों को उपरी तौर से दिखाई देनेवाली एकता की पोल खोलनेवाला विदूषक आज भी सत्य स्थिती का सत्योद्घाटन करनेवाला एक सशक्त पात्र है। प्रल्हाद केवल बालक रूप या भगवान भक्त नहीं वरन् वह तो समाज का प्रतिनिधि बनके नाटक में उभरा है। एक विचार, तथा आदर्श नेता के रूप में रंगमंचपर

प्रस्तुत हुआ है। अवधूत तो अमानवी होकर ही हमारे सामने आया है। अकुलक्षेम की आत्मा किसी प्रेतात्मा में घुसकर सामान्य लोगों को प्रेत बनाकर उनपर अपना धाक जमायें बैठा है। डॉ. लाल ने राजन को एक ऐसे चक्रव्यूह में फंसा हुआ दिखाया है। जिससे वह कभी भी बाहर न निकलने वाले अभिमन्यु के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जो वर्तमान जीवन संदर्भ की विसंगती का यथार्थ है। सत्य हरिश्चंद्र का लौका पौराणिक सत्य हरिश्चंद्र नहीं, बल्कि आज के दलित वर्ग के दु:ख, अन्याय, अत्याचार के प्रति केवल हमदर्दी नहीं प्रकट करता है। अपितु आज के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, साम्प्रदायिक भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करके दलित वर्ग का नेता बन जाता है। इस प्रकार डॉ. लाल के मिथक नाटकों के पात्र मुख्यता: आधुनिक जीवन सन्दर्भ को व्यक्त करते हैं और पुराने मिथकों को नयी अर्थवत्ता प्रदान करते हैं। मिस्टर अभिमन्यु का राजन और सत्य हरिश्चंद्र का लौका पुराने मिथक नहीं, बल्कि पुराने मिथकों को तोड-मरोड कर उन पात्रों को नये साचे में ढ़ाल दिया है, जो नाटककार की प्रतीभा का एक महत्वपूर्ण अविष्कार है।

डॉ. लाल के मिथक नाटकों के पात्र जहा एक ओर आधुनिक जीवन सन्दर्भ से जुड़े हुए है वहाँ दूसरी ओर कल्पनाशील भावभूमि के द्योतक है - जय-विजय (नरसिंह कथा), हेरूप, अकुलक्षेम तांत्रिक, तारा, कृषक (कलंकी), आदि कल्पनाशील पात्र डॉ. लाल के बौद्धिक प्रयास और आधुनिक युगबोध के परिचायक है। मनोविज्ञान के धरातल पर डॉ. लाल के कुछ पात्र अपना विशेष महत्व रखते हैं, तथा आधुनिक मानव की मनोदशा को व्यक्त करते हैं। पात्रों के चरित्रांकन में मनोविज्ञान की पृष्ठभूमि पर खंड़ित व्यक्तित्व अंकन एक नयी प्रणाली है। आज का मानव टूटा है, आज का जीवन टूटा है। अत: टूटे हुए मानव को चित्रित करने में डॉ. लाल कामयाब हुए है। पात्रों के खंडीत व्यक्तित्व के अंकन की दृष्टि से प्रद्युम्न, वेनुरती (सूर्यमुख), हिरण्यकशिपु (नरसिंह कथा), हेरूप (कलंकी), ये पात्र लाजबाब है। मनोविज्ञान की कसौटीपर ये पात्र खरे उतरते हैं।

आधुनिकता एक विशिष्ठ एवं मिश्रित अवधारणा है। आधुनिकता का निकटतम संबंध देशकाल से होता है। आधुनिकता इतिहास के परंपरागत मिथ्याचारों से मुक्त होने का प्रयास करती है। हरयुग परिवर्तनशील होता है और यही परिवर्तनशीलता ही आधुनिकता है। युग का काल के संदर्भ में आधुनिक शब्दांकन उचित है और इसमें घटित बातों में आधुनिकता आती है। आधुनिकता की पहचान स्वचेतना तथा आत्मचेतना की पहचान में निहित रहती है। वर्तमान के प्रति सजग रहना ही

आधुनिकता है। बौद्धिक व्यापार के उपयोग से आधुनिकता की पहचान होती है। पुरातन का त्याग और नवीनता का स्वीकार भी आधुनिकता है। परंपरा इतिहास प्रस्थापित कराती है परंतु इसी धारा को नया मोड़ देकर आधुनिकता में ढ़ालना साहित्य का सर्वप्रथम कार्य रहा है। आधुनिकता इतिहास बोध कराती है परंतु इतिहास बोध में परिवर्तन लाना ही आधुनिकता को स्वीकार करना है। आधुनिकता की पार्श्वभूमि पर आधुनिक युगबोध को चित्रित करने में नाटककार की जीवनानुभूति का परिचय मिलता हे। लाल के मिथक नाटकों में आधुनिक युगबोध का चित्रण प्रचुर मात्रा में मिलता है। सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक और नैतिकता के परिप्रेक्ष्य में डॉ. लाल के नाटकों में आधुनिक युगबोध का जो चित्रण प्रस्तुत हुआ है वह आज के मानव जीवन की गाथा, व्यथा तथा विसंगती का ही प्रतिफलन है। डॉ. लाल स्वयं एक उत्कृष्ट अभिनेता, कुशल निर्देशक रहे हैं। उनके सभी मिथक नाटक रंगमंचीय आयामों से परिपूरित है। उनके सभी नाटकों के समय-समय पर अनेक प्रयोग रंगमंचपर हुए है और वे समीक्षकों, निर्देशकों तथा दर्शकों के आकर्षण के केंद्र बने हैं। डॉ. लाल के मिथक नाटकों के दृश्यबंध, वस्तुविन्यास, पात्रों के क्रिया-व्यापार और आधुनिक युगबोध से अनुकूल है। उनके नाटकों के दृश्यबंध ऐतिहासिक, पौराणिक तंत्रकालिन वातावरण का आभास निर्माण करते हैं। डॉ.लाल के सभी मिथक नाटक रंगमंचपर खेले गये हैं और उन सब ने यह सिद्ध किया है कि उनके नाटक अभिनेय हैं। उनके मिथक नाटकों की नाट्यभाषा और संवाद योजना पात्रानुकूल, भावानुकूल और घटनानुकूल जरूर है तथापि वह भाषिक प्रयोग की दृष्टि से अधिक प्रभावी है। बोलचाल की नाट्यपूर्ण भाषा और संवाद डॉ. लाल की अपनी विशिष्टता है। रंगदीपन या प्रकाश योजना तथा ध्वनिसंकेतों का प्रयोग मुख्यत: पात्रों की मानसिक स्थिती, तनाव, संघर्ष तथा प्रासंगिक रूप में नाट्यानुकूल ही है। डॉ. लाल के नाटकों का टेक्निक पूरी तरह से आधुनिक है। लोकनाट्य शैली का प्रयोग उनके नाटकों के प्रयोग धर्मिता की दृष्टि से एक अन्यतम विशेषता है। डॉ. लाल के मिथक नाटक पढ़ने पर तथा देखने पर पाठको, दर्शको, समीक्षको, निर्देशको आदि ने जो प्रतिक्रिया व्यक्त की है उनसे डॉ. लाल के मिथक नाटकों की मौलिकता प्रभविष्णुता आप ही आप सिद्ध होती है और डॉ. लाल एक सफल प्रयोगधर्मी नाटककार के रूप में अपना स्थान जमाये रहते हैं। इसमें संदेह नही की आधुनिक हिन्दी का रंगमंच उजागर करने में और मंचीय उपस्थापनाओं को नयी दिशा देने में डॉ. लाल के मिथक नाटकों का योगदान सर्वोपरी है।

संक्षेप में डॉ. लाल के मिथक नाटक वर्तमान जीवन संदर्भ को रेखांकित करने में सक्षम है और कथ्य, शिल्प, शैली तथा मंचीय आयामों की दृष्टि से सफल नाट्यप्रयोग है जो डॉ. लाल को प्रयोगधर्मी नाटककार के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं। यद्यपि डॉ. लाल आज हमारे बीच में नहीं है फिर भी वे अपनी मौलिक नाट्य-रचना के कारण अमर हुए हैं। नाट्य प्रेमी उन्हें कभी भी भूल नहीं सकते और हिन्दी नाट्य साहित्य इतिहास उनकी उपेक्षा नहीं कर सकता।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

अनु.क्र.	ग्रंथ	लेखक	संस्करण	प्रकाशक
	उपजीव्य ग्रंथ (नाटक)			
1.	उत्तरयुद्ध	डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल	प्र. 1976	राजपाल एण्ड सन्स,दिल्ली
2.	एक सत्य हरिश्चंद्र	डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल.	प्र. 1976	राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
3.	कलंकी	डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल	प्र. 1969	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली.
4.	नरसिंह कथा	डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल	प्र. 1975	दि मॅकेमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लि. दिल्ली
5.	मिस्टर अभिमन्यु	डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल	प्र. 1980	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
6.	सूर्यमुख	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल	प्र. 1977	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
7.	यक्षप्रश्न	डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल	प्र. 1976	राजपाल एण्ड सन्स,दिल्ली
	संदर्भ ग्रंथ			
8.	अन्धायुग	धर्मवीर भारती		किताब महल, इलाहाबाद
9.	आज के हिंदी रंग नाटक : परिवेश और परिदृश्य	जयदेव तनेजा	प्र. 1980	तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
10.	आधुनिक हिंदी नाटक और रंगमंच	सम्पा. नेमिचंद्र जैन	प्र. 1978	दि. मैकमिलन कंपी ऑफ इंडिया लि., दिल्ली.
11.	आधुनिक हिंदी मराठी नाटकों में युगबोध	डॉ. मदन मोहन भारद्वाज	प्र. 1986	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली.

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

अनु.क्र.	ग्रंथ	लेखक	संस्करण	प्रकाशक
12.	आधुनिकता और मोहन राकेश	डॉ. उर्मिला मिश्र	अनुल्लेख्य	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वारायणसी
13.	आधुनिक हिंदी नाटक: चरित्रसृष्टि के आयाम	डॉ. लक्ष्मी राय	प्र. 1979	तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
14.	आधुनिक हिंदी नाटक: एक यात्रा दशक	नरनारायण राय	प्र. 1979	भारती भाषा प्रकाशन, दिल्ली
15.	आधुनिक हिंदी नाटक: भाषिक और संवादीय संरचना	गोविंद चातक	प्र. 1982	तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
16.	कोणार्क	जगदीशचंद्र माथुर	प्र. 1973	भारती भंडार, इलाहाबाद
17.	कृतिकार लक्ष्मीनारायण लाल	सम्पा. डॉ. रघुवंश	प्र. 1979	लिपि प्रकाशन, नई दिल्ली
18.	नयी कविता में मिथक	डॉ. राजकुमार	प्र. 1989	अंकुर प्रकाशन, दिल्ली
19.	नाटक और रंगमंच	राजकुमार	प्र. 1961	हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी
20.	नाटक और रंगमंच	सम्पा. डॉ. शिवराम माली डॉ.सुधाकर गोकाककर	प्र. 1979	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
21.	नाटककार लक्ष्मीनारायण लाल	डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र	प्र. 1980	पंचशील प्रकाशन, जयपुर
22.	नाटककार लक्ष्मीनारायण लाल की नाट्य साधना	नरनारायण राय	प्र. 1979	सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली
23.	नाट्य विमर्श	नरनारयण राय	प्र. 1984	सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली

अनु.क्र.	ग्रंथ	लेखक	संस्करण	प्रकाशक
24.	पहला राजा	जगदीशचंद्र माथुर	प्र. 1976	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
25.	मिथक : उद्‌भव और विकास	डॉ. उषा पुरी	प्र. 1986	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
26.	मिथक : एक अनुशीलन	मालती सिंह	प्र. 1988	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
27.	मिथक और आधुनिक कविता	शंभुनाथ	प्र. 1985	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
28.	मिथक और साहित्य	डॉ. नगेंद्र	द्वि. 1987	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
29.	मिथक और स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक	रमेश गौतम	प्र. 1989	नचिकेता प्रकाशन, दिल्ली
30.	मिथकीय कल्पना और आधुनिक काव्य	डॉ. जगदीशचंद्र श्रीवास्तव	प्र. 1985	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
31.	रंगभूमि भारतीय नाट्य सौंदर्य	डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल	प्र. 1989	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
32.	रंगमंच	शेल्डान चेनी अनु.श्रीकृष्ण दास	प्र. 1965	हिंदी समिती सूचना विभाग, लखनौउ - 7
33.	रंगमंच और नाटक की भूमिका	डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल	प्र. 1965	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
34.	रंगमंच : कला और दृष्टि	डॉ. गोविंद चातक	प्र. 1976	तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
35.	रंगदर्शन	नेमिचंद्र जैन	प्र. 1967	अक्षर प्रकाशन, दिल्ली
36.	लक्ष्मीनारायण लाल के नाटक और रंगमंच	डॉ. दयाशंकर शुक्ल	प्र. 1978	पीताम्बर पब्लिशिंग कंपनी, दिल्ली

अनु.क्र.	ग्रंथ	लेखक का नाम	संस्करण	प्रकाशन
37.	लहरोंके राजहंस	मोहन राकेश	तृ. 1976	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
38.	समकालीन कविता : वैचारिक आयाम	डॉ. बलदेव वंशी	प्र. 1986	इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली
39.	समकालीन हिन्दी नाटक और रंगमंच	जयदेव तनेजा	प्र. 1978	तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
40.	साठोत्तरी हिंदी नाटक	सम्पा. डॉ.विजयकांत धर दुबे	प्र. 1983	नचिकेता प्रकाशन, नई दिल्ली
41.	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक मोहन राकेश के विशेष संदर्भ में	डॉ. रीता कुमार	प्र. 1980	विभू प्रकाशन, साहिबाबाद
42.	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक का इतिहास	डॉ. लक्ष्मीसागर वापणेय	प्र. 1988	राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
43.	हिंदी नाटक में पात्र कल्पना और चरित्र चित्रण	डॉ. सूरजकांत शमी	प्र. 1975	एस्.ई.एस्. बुक कंपनी, दिल्ली
44.	हिंदी नाटक: सिद्धांत और विवेचन	डॉ. गिरीश रास्तोगी	प्र. 1967	' ग्रंथम् ' रामबाग, कानपुर
	कोष-ग्रंथ			
1.	बृहद अंग्रेजी हिंदी कोष वाल्यूम ।।	डॉ. हरदेव बाहरी	तृ. 1985	ज्ञानमंडल लि., वाराणसी
2.	हजारीप्रसाद द्विवेदी ग्रंथमाला	हजारीप्रसाद द्विवेदी	खण्ड 7	

अनु.क्र.	ग्रंथ	लेखक	सम्पादक	प्रकाशक
3.	हिन्दी साहित्य कोष भाग - 1	डॉ. धीरेन्द्र वर्मा अन्य 3	द्वि. संस्क. वसंत 5- [illegible] सं. 2020	ज्ञानमंडल लि. वाराणसी.
		पत्र - पत्रिका		
1.	भारतवाणी (अंक 4-5)	सम्पा. के.सी. सारंगमठ	अगस्त सितंबर 1990	के.पी.एच्.पी.सभा धारवाड, 560 001